निबंधः 'राजा का ओढ़ना, धोबी का बिछौना'

(लेखनः संतोष कश्यप, निदेशक, बिहार नमन ग्रुप)

जानते हैं, बिहार की अद्वितीय और भारतीय की विशाल संस्कृति में कहावतें और मुहावरे न केवल भाषा को समृद्ध बनाते हैं, बल्कि जीवन के गहरे अनुभवों और व्यवहारिक सच्चाइयों को भी सरलता से व्यक्त करते हैं जिससे हम और आप अपने दैनिक जीवन में न केवल देखते हैं बल्कि उसे जीते भी हैं। यूं तो हजारों कहावतें हैं जिससे हम और आप अवगत हैं लेकिन सामाजिक परिदृश्य में एक गूढ़ अर्थ वाली लोकोक्तिबड़ा ही विचार का मुद्दा बना हुआ है क्योंकि यह हमारे भारतीय समाज को दो रूपों में प्रतिबिंबित कर रहा है। एक है **"राजा" और एक है "धोबी"**।

जब इस पर हमने मंथन किया तो पता चला कि इस पर तो हमारे बिहार में एक बड़ा ही प्रसिद्ध लोकोक्ति मशहूर है। वह है – "राजा का ओढ़ना, धोबी का बिछौना"। इसका शाब्दिक अर्थ है कि जो चादरें राजा के लिए शान–ओ–शौकत और वैभव का प्रतीक होती हैं, वही चादरें धोबी के लिए साधारण बिछौना बन जाती हैं। यहाँ **'राजा' वैभव और ऐश्वर्य का प्रतीक** है, जबकि **'धोबी' सामान्य जीवन और संघर्ष का प्रतीक** है। यह लोकोक्ति हमें सिखाती है कि वस्तुओं या परिस्थितियों का महत्व व्यक्ति की स्थिति, सोच और आवश्यकताओं पर निर्भर करता है।

इस लोकोक्ति को देखने के बाद मुझे **मुंशी प्रेमचंद** की कही गई एक बात याद आती है–

"जिसे राजा शान समझता है, वही धोबी की आम जरूरत है। यही तो जिंदगी का फासला है।"

लोकोक्ति का गूढ़ अर्थ यह है कि एक ही वस्तु या परिस्थिति अलग–अलग लोगों के लिए भिन्न–भिन्न महत्व रखती है। राजा के लिए मखमली चादरें उसके शाही ठाट–बाट और विलासिता का प्रतीक हैं, जबकि उसी चादर का उपयोग धोबी एक साधारण बिछौने के रूप में करता है, जो उसके लिए मात्र आराम का साधन है। इसका मतलब यह हुआ कि वस्तु का मूल्य उसके भौतिक स्वरूप में नहीं, बल्कि उसके उपयोगकर्ता की आवश्यकता और परिस्थिति में छिपा होता है। यह लोकोक्तिदर्शाती है कि जिस वस्तु को एक व्यक्ति अत्यधिक मूल्यवान और सम्मानजनक मानता है, वही वस्तु दूसरे व्यक्ति के लिए सामान्य और साधारण हो सकती है।

यह लोकोक्तिजीवन के कई पहलुओं पर लागू होती है। उदाहरण के लिए, एक अमीर व्यक्ति के लिए महंगी गाड़ियाँ, आलीशान बंगले और कीमती आभूषण सामान्य बातें हो सकती हैं, जबकि एक गरीब व्यक्ति के लिए ये विलासिता की वस्तुएँ होती हैं, जिन्हें वह सपनों में ही देख पाता है। इसी प्रकार, उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले छात्रों के लिए आधुनिक सुविधाएँ साधारण हो सकती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के लिए बुनियादी शिक्षा भी किसी वरदान से कम नहीं होती। इसी भाव पर **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला** ने क्या खूब कहा है –

"विलासिता और आवश्यकता के बीच की रेखा समझनी हो, तो राजा का ओढ़ना और धोबी का बिछौना याद कर लो।"

यह लोकोक्ति हमें सिखाती है कि हमें अपनी स्थिति और परिस्थिति को समझकर संतोष और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। भौतिक सुख–सुविधाएँ और ऐश्वर्य जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं होते, बल्कि संतोष, शांति और सकारात्मक दृष्टिकोण में ही जीवन का असली सुख छिपा होता है। राजा के पास भले ही मखमली चादरें और आलीशान बिस्तर हों, लेकिन जरूरी नहीं कि उसे शांति और सुकून की नींद मिले। दूसरी ओर, धोबी के पास साधारण बिछौना और थका हुआ शरीर है, फिर भी उसे गहरी और संतोषजनक नींद आती है। इसका मतलब यह हुआ कि भौतिक वस्तुएँ केवल आराम दे सकती हैं, लेकिन मानसिक शांति और संतोष आत्मिक सुख का स्रोत होते हैं।

यह लोकोक्ति हमें सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी सोचने पर मजबूर करती है। यह सामाजिक असमानता और आर्थिक विषमता को उजागर करती है, जहाँ एक ही वस्तु के प्रति लोगों का दृष्टिकोण उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के अनुसार बदलता है। यह लोकोक्तियह भी सिखाती है कि हमें अपने सुख–दुःख और उपलब्धियों को दूसरों से तुलना करके नहीं, बल्कि अपनी परिस्थितियों और प्रयासों के आधार पर आँकना चाहिए।

आप सब ने एक फिल्म तो जरूर देखा होगा– **"दो बीघा जमीन"**। उसमें का एक बड़ा ही प्रसिद्ध डायलॉग है–

"वही कपड़ा, पर दो किस्मतें। एक को शोहरत देता है, दूसरे को सुकून!"

यह डायलॉग भी इस लोकोक्ति को सही साबित करता है

हम अपने राज्य बिहार में इस लोकोक्ति से जुड़े अनेक उदाहरण देख सकते हैं जो लोगों की जीवन परिस्थितियों और सामाजिक पहलुओं को दर्शाती है। आइए कुछ उदाहरणों से इसे और स्पष्ट रूप से समझते हैं।

बिहार में शहरों में स्थित नामी–गिरामी स्कूलों और कोचिंग संस्थानों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए स्मार्ट क्लास, लैपटॉप, और इंटरनेट की सुविधा सामान्य बात हो सकती है। उनके लिए यह शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा है। लेकिन गाँव के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए वही सुविधाएँ सपना मात्र हैं। उनके लिए एक अच्छी किताब और कुशल शिक्षक ही सबसे बड़ी उपलब्धि है। यहाँ पर **"राजा का ओढ़ना"** शहर के बच्चों की आधुनिक शिक्षा सुविधाएँ हैं, जबकि **"धोबी का बिछौना"** ग्रामीण बच्चों की बुनियादी शिक्षा संसाधन हैं।

बिहार में सम्पन्न परिवारों के लिए **शाही अंदाज़ में विवाह समारोह आयोजित करना, पाँच सितारा होटलों में बुकिंग करना, हाथी और घोड़े के साथ दुआर लगाना, दरवाजे पर कानफारू डीजे बजाना, देह से ज्यादा हवा में सेंट मार के वातावरण को महकाना, धरती से मंगल ग्रह तक ऊंचा–ऊंचा फटाका फोड़ना और फिल्मी सितारों को बुलाना** प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया है। वहीं, ग्रामीण या आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए साधारण मंडप, गाँव के समुदाय भवन और सामूहिक भोज ही विवाह का पूरा आयोजन होता है। एक ही आयोजन (विवाह) के प्रति दोनों वर्गों का दृष्टिकोण उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। यही तो है 'राजा का ओढ़ना, धोबी का बिछौना'।

पटना, गया, मुजफ्फरपुर जैसे बड़े शहरों में छठ पूजा के दौरान गंगा घाटों पर भव्य सजावट, रंग–बिरंगी लाइटें, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में छठ पूजा का आयोजन साधारण बांस के घाट, गाँव के तालाबों और मिट्टी के दीयों से ही संपन्न होता है। इस समय क्या आपने कभी इन दो जगहों के बच्चों के मन की खुशी का थाह लेने का प्रयास किया है? शायद नहीं। यहाँ "राजा का ओढ़ना" शहरी भव्यता और "धोबी का बिछौना" ग्रामीण सादगी का प्रतीक है।

कभी आप पटना के सगुना मोड़ की ओर जाइएगा तो आप देखेंगे की बड़ी–बड़ी और **ऊंची इमारतें सीधे चंद्रमा से बात करता हुआ दिखाई देगा**। इसके अलावे भी भारत और बिहार के अन्य शहरी क्षेत्रों में बड़ी–बड़ी कोठियाँ, अपार्टमेंट्स, और आधुनिक सुख–सुविधाओं से लैस घर बने हुए हैं जो उसमें रहने वाले लोगों का स्टेटस सिंबल है। इसके विपरीत, गाँवों में मिट्टी के कच्चे मकान, छप्पर और साधारण फर्नीचर ही जीवन जीने का साधन हैं और वे लोग वहां खुश भी हैं। यही लोकोक्तियहाँ सटीक बैठती है, जहाँ शहरी घर राजा का ओढ़ना और ग्रामीण मकान धोबी का बिछौना है।

पटना, मुजफ्फरपुर और भागलपुर जैसे शहरों में कार, एसयूवी और बाइक्स आम बात हैं। लोगों के लिए ये सुविधा और प्रतिष्ठा का प्रतीक हैं। वहीं, ग्रामीण इलाकों में साइकिल और बैलगाड़ी ही मुख्य परिवहन के साधन हैं। आज भी कई स्थानों पर लोग पैदल ही लंबी दूरी तय करते हैं। यह आर्थिक और सामाजिक असमानता को दर्शाता है, जहाँ एक ही परिवहन साधन अलग–अलग वर्गों के लिए भिन्न महत्व रखता है। नैतिक दृष्टि से यह लोकोक्तिहमें यह भी सिखाती है कि हमें दूसरों की परिस्थिति और जरूरतों को समझकर उन्हें सम्मान देना चाहिए। हमें अपनी स्थिति और उपलब्धियों पर गर्व करते हुए भी विनम्रता बनाए रखनी चाहिए और कभी भी किसी को उसकी आर्थिक या सामाजिक स्थिति के आधार पर नहीं आंकना चाहिए।

"राजा का ओढ़ना, धोबी का बिछौना" केवल एक लोकोक्ति नहीं, बल्कि यह जीवन की सच्चाइयों को समझने और स्वीकार करने का एक गहरा संदेश है। यह हमें सिखाती है कि सुख और शांति बाहरी भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि हमारी सोच, संतोष और आंतरिक दृष्टिकोण में छिपे होते हैं। इसलिए हमें अपनी परिस्थिति को समझते हुए संतोष और विनम्रता के साथ जीवन जीना चाहिए। इस लोकोक्तिका सार यही है कि जीवन की सच्ची समृद्धि भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि संतोष और मानसिक शांति में निहित है।